✍ कथा खंड

रामधुन

डॉ. सतीश "बब्बा"

रामधुन सिर्फ नाम का रामधुन नहीं था। वह वास्तव में धुन का पक्का आदमी था। रामधुन तब भी मजदूरी करता था जब दस रुपए दिहाड़ी थी। और रामधुन एक कुंतल अनाज से भरा बोरा पीठ पर लादकर बैलगाड़ी में रख देता था।

फिर बीस रुपए और फिर तीस रुपए दिहाड़ी मजदूरी हुई। तब भी रामधुन दिन भर अपने और अपने परिवार, बच्चों के लिए दो जून की रोटी का जुगाड करने में दिन को दिन और रात को रात नहीं समझता था।

रामधुन दीन का भी बहुत पक्का था। वह अपनी मेहनत की कमाई पर विस्वास करता था।

अब सौ रुपए के बाद ढाई सौ रुपए दिहाड़ी मजदूरी हुई। गांव के प्रधान ने उसे जाब कार्ड बनाया। आज ईमानदार को लोग इसलिए पूछते हैं कि ईमानदार से कोई खतरा नहीं होता है। लेकिन ईमानदार आदमी कभी बड़े बड़े विकास नहीं कर सकता।

प्रधान रामधुन को एक सीमित काम दिया करता था। बच्चे रामधुन के बड़े होने लगे थे। अब दो जून की रोटी का इंतजाम और कठिन हो रहा था। फिर भी रामधुन ने हिम्मत नहीं हारी और जो भी काम मिलता वह उसे मन से करता, अपनी मेहनत में उसने कभी भी कमी नहीं किया था। और अपने परिवार को दो जून की रोटी का इंतजाम कर ही लेता था!

सभी बाप की तरह रामधुन ने भी सपना देखा था। और लड़कों की पढ़ाई में कोई कोर कसर नहीं छोड़ा था; जो उसकी हैसियत थी। लड़कों की पढ़ाई में जो रामधुन के पास जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा था वह भी बिक गया था।

रामधुन तो न कोई तीर्थ स्थल गया था और न कोई मेला ही गया था। रामधुन अपना जीवन यापन मजदूरी से दो जून की रोटी का जुगाड करने में लगा दिया था।

रामधुन ब्राह्मण था और उसके भी सपने थे कि, लड़के पढ़ - लिखकर नौकरी पा जाएंगे और वह भी आराम करेगा, तीर्थ - व्रत करेगा। लेकिन यह क्या ब्राह्मण तो सामान्य वर्ग में आता है। रामधुन के लड़के अच्छे नंबरों से पास हुए थे। टेस्ट और इंटरव्यू में भी अव्वल आते थे। फिर भी उससे कम नंबर वाले लोग नौकरी पा जाते थे और ब्राह्मण होने की वजह से, आरक्षण कोटा भरने की वजह से रामधुन के लड़के लटक जाया करते थे।

रामधुन को बड़ी ग्लानि होती थी। और कभी-कभी रामधुन सोचता आत्महत्या कर लूं! फिर रामधुन पत्नी और बच्चों को देखकर जीने का मन बना लिया करता था।

रामधुन अभी भी उसी कच्चे मकान में रहता था। उसे आवासीय योजना आदि का कोई भी लाभ नहीं मिला था।

रामधुन के बाल सफेद होने लगे थे। अब बदन की झुर्रियां बता रही थी कि, तुम बूढ़े हो गए हो! फिर भी पापी पेट का सवाल था और रामधुन दो जून की रोटी के चक्कर में सुस्ता भी नहीं पा रहा था।

बेटे पढ़ कर अब मजदूरी करने की स्थिति में नहीं थे।

लड़के सूरत भाग गए, यहां घर की हालत देखकर! सूरत में किसी तरह बड़ी मुश्किल से सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी मिली थी।

सुबह उठकर सेठों की गाड़ियां धोना और खाना बनाना और बारह घंटे की ड्यूटी करना। एक ग्रेजुएट लड़कों को भाया तो नहीं लेकिन, मरते क्या न करते!

लड़के जानते थे कि, अब बाप के लिए दो जून की रोटी का इंतजाम करना बहुत बड़ी चुनौती है।

किसी तरह से रामधुन के लड़के, जैसे - तैसे सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी कर रहे थे। उनके भी सपने थे कि, बाप अब काम करना बंद कर दे।

यहां रामधुन इस चिंता में था कि, मेरी गरीबी देखकर मेरे लड़कों की शादी कैसे होगी।

यहां रामधुन के एक लड़के को तो सूरत का पानी कुछ असर कम किया था लेकिन, बड़े लड़के की तबीयत सूरत में ही खराब हो गई थी।

पहले तो रामधुन का छोटा वाला लड़का अपने भाई की दवा वहीं करवाता रहा था लेकिन पैसे भी नहीं हो पा रहे थे। और दवाओं का कोई असर भी नहीं हो रहा था। भाई दिन दिन कमजोर होता जा रहा था। किसी तरह से आरक्षण हो पाया और भाई को रेलगाड़ी से घर के लिए लेकर चला।

अब रेलगाड़ी में जनरल डब्बा कम होते हैं। जनरल डब्बा में यात्रा करना संभव नहीं है; फिर कोई मरीज लेकर कैसे आ सकता था। और यही हाल शयनयान स्लीपर कोच का भी है।

सरकार ने अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए वातानुकूलित डिब्बे बढ़ा दिए हैं। और मजबूर रामधुन का छोटा लड़का अपने भाई को वातानुकूलित डिब्बे की टिकट लेकर चला था। उसके सारे पैसे चुक गए थे।

घर आकर तमाम कोशिशों के बावजूद रामधुन का बड़ा बेटा नहीं बच पाया था। और मां को बेटे की मौत का गहरा सदमा लगा और कुछ दिनों में मां भी, रामधुन की पत्नी भगवान को प्यारी हो गई थी।

रामधुन बेटे के सदमे से उबर भी नहीं पाया था कि, पत्नी का साथ छूट जाना उसके बर्दाश्त के बाहर था और रामधुन अब अर्ध पागल सा हो गया था।

रामधुन के छोटे बालक ने धैर्य से काम लिया। वह पढ़ा लिखा था। गांव में काम नहीं मिलता तो पड़ोस के गांव और कस्बों में दस - दस किलोमीटर पैदल चलकर वह खुद मजदूरी करने लगा था।

वह रामधुन से कहता था, "बाबू जी आपने बहुत किया अब आप आराम कीजिए, मैं आपका बेटा हूं, दो लोगों के लिए दो जून की रोटी का जुगाड कर ही लूंगा!"

रामधुन को यह चिंता थी कि, 'मेरा वंश क्या यहीं समाप्त हो जाएगा?'

अब छोटा लड़का किसी तरह से दो जून की रोटी का इंतजाम करने लगा था। रोटी बनाने वाला नहीं था। और इतनी दर्दनाक घटनाओं से वह भी बहुत चिंतित रहता था। बाप की ऐसी हालत उस बंदे से सहन नहीं हो पा रही थी।

रामधुन बस वही दो जून की रोटी के चक्कर में जिंदगी भर संघर्ष करता रहा आया। और अब बड़े बेटे का जाना, पत्नी का साथ छूटना एक असह्य, पीड़ा दायक घटनाएं थीं!

रामधुन अब यही सोचता है, 'क्या हुआ, क्या मिला पढ़ाने - लिखाने से? आखिर मेरी तरह यह मेरा बेटा भी तो दो जून की रोटी जुटाने के चक्कर में रात - दिन एक कर रहा है।

रामधुन के लिए यह सभी प्रश्न अनुत्तरित थे कि, क्या मेरे इस बेटे को कोई अपनी बेटी दे सकता है? ताकि मेरा भी वंश आगे बढ़ता रहे!

दो जून की रोटी के जुगाड में रामधुन का छोटा बेटा पढ़-लिखकर ग्रेजुएट थकता जा रहा था।

रामधुन खुद नहीं जानता कि, आगे क्या होगा और क्या होने वाला है!

दो जून की रोटी के चक्कर में रामधुन और रामधुन का बेटा लगे रहते हैं। न ही रामधुन तीर्थ जानता है कि, कैसे होते हैं और न यही जानता है कि, दो जून की रोटी जुटाने के अलावा संसार में और कुछ महत्वपूर्ण है।

रामधुन का बेटा अपने पिता को दिनों-दिन बूढ़ा होता देखकर बहुत ही चिंतित है।

वह भी सोचता है कि, 'क्या मेरे बापू मेरे लिए पत्नी और अपने लिए बहू का जुगाड कर पाएंगे?'

आज भी रामधुन का बेटा मजदूरी करता है और बाप बना रहे यह उपाय भी करता रहता है।

ऐसा लगता है कि, एक अच्छे संस्कार, स्वभाव का अच्छा आदमी सारी उम्र दो जून की रोटी में लगाने वाले रामधुन को बहू मिलेगी या नहीं?

क्योंकि हर ब्राह्मण लड़की का बाप सरकारी नौकरी वाला वर, लड़का ढूंढ़ रहा है।

और तो और अब लड़कियां दूसरी जाति में भी भाग्य आजमाने लगी हैं!

डॉ. सतीश "बब्बा"

पता- डॉ. सतीश चन्द्र मिश्र, ग्राम + पोस्ट = कोबरा,

जिला- चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश, पिनकोड - 210208.

मोबाइल - 9451048508, 9369255051.

ई मेल - babbasateesh@gmail.com